Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में महिला कलाकारों की भूमिका

KARUNA MAJOTRA
Ph.D. Research Scholar, Lovely Professional University, Punjab

सार *: भारतीय संगीत का क्षेत्र बहुत विशाल है, उसका कारण यह है कि उसने अपने आप को विस्तृत और समृद्ध करने के लिए हमेशा सतत् प्रयास किए हैं। उसने संगीत की विभिन्न धाराओं को एक-दूसरे से आदान-प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया। भारत का भौगोलिक क्षेत्र विशाल होने के कारण अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग संस्कृतियां पनपीं, जिनकी भिन्न-भिन्न लोक संगीत धाराओं और लोकधुनों ने भारतीय संगीत के भण्डार को अत्याधिक विशाल और समृद्ध बनाया। अपने हृदय की विशालता के कारण भारतीय संगीत ने बाहर से आने वाली संस्कृतियों, कलाओं को अपने भीतर आत्मसात किया। यही कारण है कि ध्रुपद गायन के साथ-साथ ख्याल गायन भी, भारतीय संगीत का हिस्सा बना। इसी तरह ठुमरी और ग़ज़ल ने भी भारतीय संगीत के श्रृंगार को और बढ़ाया है। ग़ज़ल भारतीय संगीत की एक ऐसी गायन विधा है जो हजरत अमीर खुसरो से लेकर आज तक अपनी साहित्यिक और सांगीतिक विशेषताओं के कारण कला मर्मज्ञों, बुद्धिजीवियों विद्वानों से लेकर साधारण श्रोता को सदा आकर्षित करती रही। इसकी खूबसूरती यह है कि भारतीय संगीत में ध्रुवपद, ख्याल और ठुमरी के जो अलग-अलग दौर आए, ग़ज़ल ने इन सभी युगों में अपने वजूद को कायम रखा। शास्त्रीय नियम कड़े न होने के कारण ग़ज़ल गायकी का क्षेत्र विस्तृत होता रहा। ग़ज़ल गायन को प्रसिद्धि दिलाने में जिन स्त्री कलाकारें की खास भूमिका रही उनके बेगम अख्तर, मल्लिका पुखराज इकबाल बानों, फरीदा खानम, नूरजहां आदि इन्होंने अपने-अपने ढंग से ग़ज़ल गायकी को एक नई रुप-रेखा दी।*

मुख्य शब्द *: संगीत, ग़ज़ल, बेगम अखतर, मल्लिका पुखराज*

ग़ज़ल भारतीय संगीत की एक ऐसी गायन विधा है जो हजरत अमीर खुसरो से लेकर आज तक अपनी साहित्यिक और सांगीतिक विशेषताओं के कारण कला मर्मज्ञों, बुद्धिजीवियों विद्वानों से लेकर साधारण श्रोता को सदा आकर्षित करती रही। इसकी खूबसूरती यह है कि भारतीय संगीत में ध्रुवपद, ख्याल और ठुमरी के जो अलग-अलग दौर आए, ग़ज़ल ने इन सभी युगों में अपने वजूद को कायम रखा। शास्त्रीय नियम कड़े न होने के कारण ग़ज़ल गायकी का क्षेत्र विस्तृत होता रहा। ग़ज़ल गायन को प्रसिद्धि दिलाने में जिन स्त्री कलाकारें की खास भूमिका रही उनके बेगम अख्तर, मल्लिका पुखराज इकबाल बानों, फरीदा खानम, नूरजहां आदि इन्होंने अपने-अपने ढंग से ग़ज़ल गायकी को एक नई रुप-रेखा दी।

बेगम अख्तर

20वीं शताब्दी में ग़ज़ल की विरासत को अख्तरी बाई 'फैजाबादी' जिन्हें 'बेगम अख्तर' के नाम से भी जानते हैं, उन्होंने अपने 'फन-ए-मौसिकी' से सजा, संवारकर उसे एक नया रूप दिया। जिस वक्त ठुमरी, दादरा गाने वाली गायिकाएं ग़ज़ल को भी ठुमरी दादरा के अन्दाज में ही पेश कर रही थी उसी वक्त बेगम अख्तर ने ग़ज़ल की शायरी, अल्फाज के तल्लफुज, उसकी जबानी कैफियत को समझते हुए, उसे अपनी आवाज़ का रंग देकर मौसिकी में भी एक उच्चा मुकाम दिलवाया। हालांकि बेगम साहिबा ठुमरी, दादरा, कज़री आदि गायन शैलियों को भी खूब निभाती थी, पर ग़ज़ल गायकी में जो कमाल और हुनर उन्होंने पेश किया वह आने वाले ग़ज़ल गायक व फनकारों की हमेशा रहनुमाई करता रहा है। उन्होंने गालिब, मीर, मोमिन, दाग की मशहूर गजलों के साथ-साथ शकील बदांयुनी, सदुर्शन फाकिर, कैफी आज़मी जैसे कई अन्य शायरों को भी अपनी खूबसूरत आवाज़ से नवाजा। इनकी पुर-असर, खनकदार और भरी हुई आवाज ने अपना जो असर छोड़ा उससे महिला गजल-गायिकाओं की एक लम्बी परम्परा स्थापित हुई, जिसमें हिन्दोस्तान और पाकिस्तान की अनेकों ग़ज़ल गाने वाली फनकारों के नाम इस फहरिस्त में लिखे जा सकते हैं। बेगम अख्तर ने अपनी ग़ज़ल गायकी को हिन्दोस्तान तक ही सीमित नहीं रखा उन्होंने पाकिस्तान, अफगानिस्तान, रूस जैसे देशों में भी अपनी आवाज़ और फन से ग़ज़ल गायकी को मकबूल किया। बेगम अख्तर द्वारा गाई गई कुछ मशहूर ग़ज़लों के मतले इस प्रकार हैं। जैसे:-

उलटी हो गई सब तदबीरें,
कुछ न दवा ने काम किया।
देखा इस बीमारी-ए-दिल को,
अपना काम तमाम किया।

वो जो हम में तुम में करार था,
तुम्हें याद हो के न याद हो।
वही यानी वादा निबाह का,
तुम्हें याद हो के न याद हो।
ऐ मोहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया,
जाने क्यों आज तेरा नाम पे रोना आया।
कुछ तो दुनियां की इनायत ने दिल तोड़ दिया,
और कुछ तलखिए-हालात ने दिल तोड़ दिया।

मल्लिका पुखराज

अपनी आवाज के जादू से हिन्दोस्तान और पाकिस्तान में शोहरत हासिल करने वाली गायिका मलिका पुखराज गीत, ग़ज़ल जैसी गायन शैलियों को मकबूल करने में, खूब सफल हुई। ग़ज़ल गायन की जिस परम्परा की शुरूआत बेगम अख्तर ने हिन्दोस्तान में की थी। भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान में उस परम्परा को मजबूत और समृद्ध करने में मलिका पुखराज की खास भूमिका रही है। यह भी एक इत्तफाक है कि बेगम अख्तर की गायिकी का किसी हद तक उनपर असर भी था और बेगम साहिबा से उनकी अतः रंग मित्रता भी थी। 'अभी तो मैं जवान हूं' की सदाबहार गायिका मलिका पुखराज ने अपनी आवाज के दम पर चार दशक से भी ज्यादा अपने चाहने वाले पर हुकूमत की और आज भी उनकी आवाज का जादू बरकरार है।

उर्दू और फारसी के प्रसिद्ध शायर इकबाल की ग़ज़ल 'तेरे इश्क की इन्तहा चाहता हूं' मेरी सादगी देख मैं क्या चाहता हूं, भरी बज्म में बात कह दी है मैनें, बड़ा बेअदब हूं सजा चाहता हूं। मलिका ने जिस खूबसूरत अंदाज में गाई जो बेहद लोकप्रिय हुई। ऐसे ही अनेकों गजलों को मलिका ने अपनी आवाज देकर अमर कर दिया। मलिका पुखराज ग़ज़ल को गायन विधा के रूप में पेश करने को पूरी तरह कामयाब हुई। मल्लिका पुखराज के स्वर में यदि कोई व्यक्ति भी उसे गौर से सुन पाए तो बेशक वह फिर से लौट आई जवानी जैसा कुछ महसूस न करे, मगर उसके मन-मस्तिष्क में अपनी जवानी की रंगीन स्मृतियां अवश्य उभरने लगेंगी।

इकबाल बानो

इकबाल बानों एक ऐसी नायाब आवाज की मल्लिका थी, जिसमें, गीत हो या ग़ज़ल, जब उस आवाज का स्पर्श पाते थे, तो वे बेशकीमती गीतों की कतार में खुद-ब-खुद आकर सज जाते थे। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में उनके फन के कद्रदानों की कोई कमी न थी। उर्दू और फारसी की ग़ज़लें गाने में उन्हें मुहारत हासिल थी। इसीलिए हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के अलावा ईरान और अफगानिस्तान में भी उनकी खूबसूरत आवाज के बेशुमार दीवाने थे। ठुमरी और दादरा की गायन शैलियों पर भी उन्हें गज़ब की महारत हासिल थी और उन्होंने बेगम अख्तर की परम्परा को अपनी मखमली आवाज से विस्तृत और समृद्ध बनाया। यही नहीं ग़ज़ल गायिकी के जानकार इकबाल बानों और बेगम अख्तर में कई समानताएं देखते हैं। शैली और निभाव के दृष्टिकोण से दोनों फनकार खालिस क्लासिकी अंदाज की गायन शैली की गायिकाएं थी। इकबाल बानों द्वारा गाई गई गजलों, नज्मों, ठुमरी, दादरा आदि गायन शैलियों की बेहतरीन रचनाओं को म्युजिक टुडे ने गुल्स्तिान के नाम से उनकी कैसेट्स की सीरीज भी रीलीज की थी। उन्होंने नासिर काजमी, मीर और गालिब जैसे नए और पुराने शायरों की ग़ज़लों को अपनी आवाज दी। वो फारसी जुबान से भी बाकायदा वाकिफ थी इसलिए वो मीर और गालिब के कलाम गाते वक्त लफ्जों को बिल्कुल दरूस्त अदा करती थी। उन्होंने गालिब की बहुत-सी गजलें गाई है जैसे मुद्दत हुई है यार को मेहमां किए हुए, जोशे कदा से बज्में चिरागां किए हुए। इसके अलावा उन के द्वारा गाई गई कुछ मशहूर ग़ज़लों के मतले इस प्रकार है। जैसे:-

दागे दिल हम को याद आने लगे, लोग अपने दिए जलाने लगे।

इश्क जब जमजमा पहरा होगा, हुस्न खुद महबे तमाशा होगा।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

नूरजहां

भारत और पाकिस्तान में जिन गायकों को उन के गुणों के अनुसार सब से ज्यादा शोहरत हासिल हुई, नूरजहां उन में से एक है। भारत विभाजन के समय नूरजहां ने हिंदी फिल्मों के लिए अभिनय भी किया और अपनी खूबसूरत आवाज से अनेकों गीतों को सजाया। अनमोल घड़ी के गीत, आवाज दे कहां है, दुनियां मेरी जवां है, ने उन्हें लोकप्रियता की पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया। इस फिल्म का संगीत प्रसिद्ध संगीत निर्देशक नौशाद द्वारा तैयार किया गया था। इसके अलावा इनके अन्य गीत जो बहुत लोकप्रिय हुए। जैसे:-

जवां है मोहब्बत हसीं है जमाना,

लुटाया है दिल ने खुशी का फसाना।

आजा मेरी बरबाद मोहब्बत के सहारे,

वो कौन है बिगड़ी हुई तकदीर सवारे।

भारत विभाजन हो जाने पर कई बड़े फनकार पाकिस्तान चले गए। नूरजहां ने भी मुंबई की फिल्म-नगरी को छोड़कर लाहौर के फिल्म उद्योग को खुशहाल बनाना बेहतर समझा। 1960 के बाद उन्होंने अपना सारा ध्यान अपनी गायिकी पर ही केन्द्रित किया और अनेकों पाकिस्तानी फिल्मों में बतौर प्लेबैक सिंगर काम किया। उनकी आवाज के जादू ने उन्हें पाकिस्तान में भी बेशुमार शोहरत दिलवाई। उन्हें 'मल्लिका-ए-तरन्नुम' का खिताब भी हासिल हुआ। भारत की सुप्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर भी उनसे बेहद प्रभावित रही और दोनों के अंतरंग संबंध रहे। 'लता मंगेशकर नूरजहां को अपना आराध्य मानती हैं, उनका कहना है कि नूरजहां को सुन कर उसने गाना सीखा। नूरजहां ने पाकिस्तान में उर्दू और पंजाबी फिल्मों के लिए बेशुमार गीत गाए। इसके अलावा उनकी और भी कई गैर फिल्मी ग़ज़लें और गीत सदाबहार नगमों की तरह सुनने वालों के दिलों में गूंजते रहते हैं। जिन के कुछ उदाहरण यहां उद्धृत हैं।

नीयते शौक भर न जाए कहीं।

तेरे प्यार में रुसवा हो कर, जाएं कहां दीवाने लोग।

दिल धड़कने का सबब याद आया।

तुम आए हो न शब-ए-इन्तजार गुजरी है।

फरीदा खानम

महिला ग़ज़ल गायिकाओं की परम्परा में फरीदा खानम का नाम ग़ज़ल गायिकी के क्षेत्र में लगभग पिछले 5 दशकों से बुलंदियों पर है। उर्दू ग़ज़लों, की भावात्मक अभिव्यक्ति में फरीदा खानम अपनी मिसाल आप हैं। शायरी में पेश किए गए ख्यालात और जज्बात की गहराई को समझकर अपनी गायकी द्वारा उन्हें साक्षात् करने का हुनर इनके हिस्से आया। जिस ग़ज़ल परम्परा की आवाज बेग़म अख़तर साहिबा से हुई थी, फरीदा खानम ने उसे बुलन्दिओं तक पहुंचा दिया। ग़ज़ल गायकी पर उनकी गहरी पकड़ होने के कारण उन्हें 'मल्लिका-ए-ग़ज़ल' के नाम से जाना जाता है। अपनी खुली आवाज में शास्त्रीय रागों पर आधारित उनकी गायन शैली एक अलौकिक वातावरण का सृजन करती है। लफ्जों की स्वाभाविक लहजे में अदायगी, मींड, कण और मुर्कियों का अल्प प्रयोग, तानबाजी से परहेज, ताल से हटकर गाने का विशेष अंदाज, ख्यालनुमा अंदाज में ग़ज़ल की अभिव्यक्ति उनके गायन की खास विशेषताएं हैं। अतीत और वर्तमान के अनेकों उर्दू शायरों की ग़ज़लों को उन्होंने अपनी स्वर-लहरियों से सजाया है। पाकिस्तान में उन्हें कई फिल्मों में प्लेबैक सिंगर के रूप में भी गाने का सुभाग्य हासिल हुआ पर ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में उन्हें शोहरत हासिल हुई। भारत और पाकिस्तान के आम श्रोताओं में उनके द्वारा गाई गई एक नज़्म 'आज जाने की जिद न करो' बेहद लोकप्रिय हुई। इस के अतिरिक्त उनकी गाई अनेकों ग़ज़लें मौसिकी और अदब से मोहब्बत करने वालों के दिलों में धड़कती रही हैं, जिनमें से कुछ गजलों के मतले इस प्रकार से हैं। जैसे:-

दिले मुजतर को समझाया बहुत है,

मगर इस दिल ने तड़पाया बहुत है।

वो इश्क जो हम से रूठ गया फिर उसका हाल सुनाएं क्या,

कोई महर नहीं कोई कहर नहीं फिर सच्चा शेर सुनाएं क्या।

कुछ इश्क था कुछ मजबूरी थी, सो मैने तन मन वार दिया,

मैं कैसा जिंदा आदमी था इक शख़्स ने मुझ को मार दिया।

है यहां नाम इश्क का लेना,

अपने पीछे बला लगा लेना।

निष्कर्ष

ग़ज़ल एक भावुक गायन शैली होने के कारण प्रत्येक गायक इसे अपने मनोभावों और अपनी रचनात्मक प्रतिभा से इसमें अपना रंग भरने की कोशिश करता रहा है। जिससे ग़ज़ल गायकी का वर्तमान स्वरूप आकर्षक और प्रभावशाली बन सका। ग़ज़ल गायन को लोकप्रिय बनाने में स्त्री कलाकारों की भी विशेष भूमिका रही है। भारत और पाकिस्तान की स्त्री ग़ज़ल-गायिकाओं ने उसे अपनाया ही नहीं बल्कि उसे और समृद्ध किया।

संदर्भ

पंकज, राग-धुनों की यात्रा, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008
प्रेम भण्डारी (डॉ.), हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, 1995
सुरेश कुमार, ग़ज़लें सरहद पार से, डायमंड पाकेट बुक्स, दिल्ली, 2004
राम सिंह यादव (डॉ.), आज कुछ बात है जो शाम पे रोना आया-बेगम अख्तर, संगीत कार्यलय हाथरस, सितंबर, 1998
रफीक रसाल मलिका, यानी सुरों की शहजादी, संगीत कार्यलय हाथरस, सितंबर, 2010
इकबाल माहल-सुरों के सौदागर, दुनियां मेरी जवां है, प्रकाशन शिला लेख, दिल्ली 2003
कृष्णस्वरुप, ग़ज़ल, ग़ज़ल की भाषा और ग़ज़ल गायकी, संगीत कार्यलय हाथरस, नवम्बर, 1992